वैपुल्यसूत्रराज सद्धर्मपुण्डरीक की सामाजिक उपादेयता

दिलीप कुमार
शोध छात्र, पीएच.डी, भाषा, साहित्य संस्कृति एवं अध्ययन संस्थान् जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली- 110067

Received: June 12, 2018 Accepted: July 25, 2018

महायान धर्म की मूल शिक्षाएँ सूत्र ग्रंथों में संगृहीत हैं। इन्हें महायान सूत्र और वैपुल्य सूत्र भी कहते हैं। महायान सूत्र अनेक हैं किन्तु इनमें से कुछ ग्रन्थ ऐसे हैं जिनका विशेष रूप से आदर है। इनकी संख्या 9 है। ये इस प्रकार है- अष्टसाहस्रिका-प्रज्ञा-पारमिता, सद्धर्मपुण्डरीक, ललित-विस्तर, लंकावतार, सुवर्णप्रभास, गण्डव्यूह, तथागत-गुह्यक, समाधिराज और दशभूमीश्वर। इन्हें नेपाल में नवधर्म (धर्मपर्याय) कहते हैं। इन्हें वैपुल्यसूत्र भी कहते हैं। नेपाल में इनकी पूजा होती है।इन नौ सूत्रों में सद्धर्मपुण्डरीक को वैपुल्यसूत्रराज के नाम से जाना जाता है।

यहाँ सद्धर्मपुण्डरीक की सामाजिक उपादेयता को बताया जाएगा। सामाजिक का अर्थ है जब मनुष्य समाज में शील बनने की होने वाली वृत्ति को समझ लेता है या अपना लेता है, तब वह सामाजिक कहलाता है। उपादेयता से तात्पर्य है समाज में, समाज के लिए उपयोगी और लाभप्रद होने की स्थिति। सद्धर्मपुण्डरीक नामक यह ग्रन्थ समाज के लिए किस प्रकार से लाभकारी या उपयोगी रहा इन बिन्दुओं को जाना जाएगा।

नौ वैपुल्यसूत्रों में 'सद्धर्मपुण्डरीक' सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ माना जाता है। अनेसाकी ने इसके शीर्षक की व्याख्या करते हुए लिखा है : "पुण्डरीक (कमल) शुद्धता एवं पूर्णता का प्रतीक है। जिस प्रकार मलिन पंक से उत्पन्न होकर भी कमल उससे लिप्त नहीं होता, उसी प्रकार बुद्ध भी इस संसार में उत्पन्न होने पर भी सांसारिक प्रपंचों एवं क्लेशों से सर्वथा निर्लिप्त रहते हैं तथा जैसे कमल के फल फूल के खिलते ही पक जाते हैं, वैसे ही बुद्ध द्वारा उपदिष्ट सत्य भी समृद्धि-रूप फल को तुरंत देने में समर्थ होता है।" [1] सद्धर्मपुण्डरीक के अर्थ को हम सरलतम रूप में इस प्रकार समझ सकते हैं-

सद्धर्मपुण्डरीक तीन शब्दों के संयोग से बना है : सद् + धर्म + पुण्डरीक। सद् का तात्पर्य है अच्छा, धर्म का तात्पर्य बुद्ध के उपदेशों से है तथा पुण्डरीक का तात्पर्य श्वेत कमल से है, इस प्रकार समग्ररूप में सद्धर्मपुण्डरीक का अर्थ बुद्ध द्वारा निर्दिष्ट सद्मार्ग है जो कमल के समान सुन्दर, पवित्र तथा निर्लिप्त है। जिस प्रकार पुण्डरीक पानी और कीचड़ में उत्पन्न होकर भी उनमें लिप्त नहीं होता, बुद्ध की शिक्षाएँ भी इस दु:खी और क्लेश युक्त संसार में स्थित रहकर अपने अनुयायियों के लिए निर्वाण का मार्ग प्रशस्त करती हैं किन्तु स्वयं कलुषित नहीं होती। इसके अतिरिक्त जिस प्रकार कमलपुष्प के साथ सुन्दरता तथा पवित्रता का भाव जुड़ा है, उसी प्रकार बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ भी सुन्दर तथा पवित्र हैं क्योंकि उनमें मानव को सांसारिक दु:खों से मुक्त कराने की क्षमता है।

चीन, जापान, कोरिया, तिब्बत आदि महायानी देशों में इस ग्रन्थ का बड़ा आदर है और यह सूत्र बहुत पवित्र माना जाता है। इस ग्रन्थ में कुल 27 अध्याय है, जिन्हें 'परिवर्त' कहा गया है। पहले निदान परिवर्त में ग्रन्थ के निर्माण के विषय में कहा गया है कि यह ग्रन्थ "वैपुल्यसूत्रराज" है—

वैपुल्यसूत्रराजं परमार्थनयावतारनिर्देशम्।
सद्धर्मपुण्डरीकं सत्त्वाय महापथं वक्ष्ये॥

अर्थात् मैं अब वैपुल्यसूत्रों में श्रेष्ठ उस सद्धर्मपुण्डरीक का वर्णन करूँगा, जो परमार्थ-प्राप्ति के उत्तम उपायों का निर्देश करता है तथा जो स्वयं प्राणियों को मोक्ष की ओर ले जाने का श्रेष्ठ मार्ग है।

कर्न के मत में-

"The Lotus being one of the standard work of the Mahayan, the study of it cannot but be useful for the right appreciation of the remarkable system,"[3]

इसकी श्रेष्ठता का विवेचन करते हुए कहा गया है : "जैसे सभी जलाशयों में समुद्र श्रेष्ठ है, सभी पर्वतों में सुमेरु श्रेष्ठ है, सभी नक्षत्रों में चन्द्रमा श्रेष्ठ है, सभी देवों में शक श्रेष्ठ है तथा सभी श्रावकों में प्रत्येकबुद्ध श्रेष्ठ हैं, उसी प्रकार सभी धर्मपर्यायों में सद्धर्मपुण्डरीक श्रेष्ठ है।

[1] Buddhist Art in its relation to Buddhist Ideals. 15 |

[2] सद्धर्मपुण्डरीक, अनु० डॉ० राममोहन दास, निदानपरिवर्त, पृ० 1

[3] सद्धर्मपुण्डरीक, भूमिका, पृ० 33 |

इस ग्रन्थ की सामाजिक उपादेयता को दर्शाते हुए कहा गया है कि जिस प्रकार सूर्य अन्धकार को नष्ट करता है, उसी प्रकार सद्धर्मपुण्डरीक अमंगल का नाश करता है। अर्थात् अंधकार रूपी दु:खों को नष्ट करके, अमंगल का नाश करके पूरे संसार में सब मंगलमय कर देता है।[4]

यह सद्धर्मपुण्डरीक नामक धर्मपर्याय सब प्राणियों की, सब भयों से रक्षा करने वाला तथा सब दु:खों से मुक्त करने वाला है। जैसे तडाग तृषार्त्तों का रक्षक है, अग्नि शीतार्त्तों की रक्षक है, वस्त्र नग्न व्यक्तियों का रक्षक है, सार्थवाह वणिजों का रक्षक है, माता पुत्रों की रक्षिका है, नौका पार जाने वालों का रक्षक है, वैद्य रोगियों का रक्षक है, दीपक तम, अन्धकार से आवृत स्थानों के लिए उपयोगी है, रत्न धनार्थियों के लिए आवश्यक है, चक्रवर्त्ती सब कोट्टराजाओं का रक्षक है, समुद्र नदियों का आश्रय है तथा उल्का सब तम, अन्धकार का नाशक है, उसी प्रकार ही यह सद्धर्मपुण्डरीक नाम ग्रन्थ सब दु:खों से मुक्त करने वाला, सब रोगों को नष्ट करने वाला एवं संसार के सब भय-बन्धन एवं कष्टों से छुटकारा दिलाने वाला है।[5]

इस ग्रन्थ का प्रधान उद्देश्य है यानत्रय—श्रावकयान, प्रत्येकबुद्धयान एवं बोधिसत्त्वयान के स्थान पर एकयान (बुद्धयान) की स्थापना करना-

"एकं हि यानं द्वितियं न विद्यते
तृतियं हि नैवास्ति कदाचि लोके॥"

तीनों यानों का पर्यवसान बुद्धयान में ही होता है। यह बुद्धयान ही सर्वज्ञतापर्यवसायी एवं तथागतज्ञानदर्शन की प्राप्ति तथा उसका सन्दर्शन, अवतारण एवं प्रतिबोधन कराने वाला है। सद्धर्मपुण्डरीक ग्रन्थ में कहा गया है कि बुद्धयान के द्वारा ही निर्वाण की प्राप्ति सम्भव है, अन्य यानों के द्वारा नहीं। हीनयान के अर्हत् क्लेशावरणों का नाश करके पुद्गलशून्यता तो प्राप्त कर लेते हैं किन्तु वे ज्ञेयावरणों को हटाकर धर्मशून्यता प्राप्त करने में समर्थ नहीं होते। इसके परिणामस्वरूप उन्हें निर्वाण की प्राप्ति नहीं होती। उन्हें इसके लिए बुद्धयान की ही शरण लेनी पड़ती है। किन्तु जो आरम्भ से ही बुद्धयानी है, उन्हें निर्वाण प्राप्ति में कोई कठिनाई नहीं होती।

सद्धर्मपुण्डरीक के श्रवण, पठन, लेखन, प्रचार एवं पूजन से व्यक्ति अनेक दिव्य गुणों एवं शक्तियों को प्राप्त करता है - य: कश्चित् कुलपुत्र इमं धर्मपर्यायं धारयिष्यति, वाचयिष्यति, देशयिष्यति वा लिखिष्यत वा स अष्टौ चक्षर्गुणाशतानि प्रतिलप्स्यते, द्वादश श्रोत्रगुणशतानि प्रतिलप्स्यते, अष्टौ घ्राणगुणशतानि प्रतिलप्स्यते, द्वादश जिह्वागुणशतानि प्रतिलप्स्यते, अष्टौ कायगुणशतानि प्रतिलप्स्यते, द्वादश मनोगुणशतानि प्रतिलप्स्यते ।[7]

इस ग्रन्थ के माध्यम से तथागत समाज को समभाव का परिचय देते हुए कहते हैं कि तथागत सभी जीवों को समभाव से शिक्षा देते हैं, विषम भाव से नहीं। जिस प्रकार सूर्य और चन्द्रमा का प्रकाश सम्पूर्ण संसार को प्रकाशित करता है—पापी और पुण्यात्मा, ऊँच-नीच, सुगन्धित और दुर्गन्धित, सर्वत्र उनका प्रकाश समरूप से पड़ता है, विषम रूप से नहीं। उसी प्रकार अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध तथागतों के सर्वज्ञ ज्ञान-विषयक ज्ञान का प्रकाश एवं उनकी सद्धर्मदेशना, पाँच गतियों में उत्पन्न सभी प्राणी एवं महायानिक प्रत्येक बुद्धयानिक एवं श्रावकयानिक, इन सबके विषय में उनकी प्रवृत्ति के अनुसार समान रूप से प्रवृत्ति होती है। तथागत के ज्ञान के प्रकाश मे कमी या अधिकता नहीं होती; क्योंकि वह पवित्र ज्ञान के उद्गम के लिए होता है। यान तीन नहीं हैं, केवल प्राणियों के विभिन्न रूपों में आचरण करने के कारण ही यान की त्रिविधता प्रतीत होती है।[8]

तथागत बोधिज्ञान को ही निर्वाण प्राप्ति का प्रधान कारण मानते हुए कहते हैं कि- "मैं बोधिज्ञान को ही निर्वाण-प्राप्ति का प्रधान कारण मानता हूँ, अत: एक स्वर से मैं इस ज्ञान का उपदेश देता हूँ। यह सबके लिए एक है; इसमें विषमता नहीं है; इसमें किसी के प्रति राग या द्वैष नहीं है—

"स्वरेण चैकेन वदामि धर्मं बोधिं निदानं करियान नित्यम्
समं हि एतद्विषमत्व नास्ति न कश्चि विद्वेषु न रागु विद्यते"

इस प्रकार यह वैपुल्यसूत्रराज सद्धर्मपुण्डरीक समाज को परमार्थ प्राप्ति के उत्तम उपायों को बताने वाला, संसार को मोक्ष की ओर ले जाने वाला, संसार में अंधकार रूपी दु:खों को नष्ट करने वाला, मनुष्य के रोगों को दूर करने वाला, संसार के भय-बन्धनों से छुटकारा दिलाने वाला, अमंगल का नाश करके समाज को सुखी एवं मंगलमय बनाने वाला, समाज में एक यान (बुद्धयान) का संदेश देने वाला है।

---

[4] सद्धर्मपुण्डरीक, अनु० डॉ० राममोहन दास, भैषज्यराजपूर्वयोगपरिवर्त, पृ० 424 |

[5] सद्धर्मपुण्डरीक, अनु० डा० राममोहन दास, भैषज्यराजपूर्वयोगपरिवर्त, पृ० 424-25 |

[6] सद्धर्मपुण्डरीक, धारणीपरिवर्त, पृ. 405 |

[7] धर्मभाणकानुशंसापरिवर्त, पृ० 360 ।

[8] सद्धर्मपुण्डरीक, अनु० डॉ० राममोहन दास, औषधीपरिवर्त, पृ० 145 |

[9] सद्धर्मपुण्डरीक, अनु० डॉ० राममोहन दास, औषधीपरिवर्त, पृ० 135 |